अशोक वाजपेयी

मुझे चाहिए

मुझे चाहिए पूरी पृथ्वी,
अपनी वनस्पतियों, समुद्रों
और लोगों से घिरी हुई,
एक छोटा-सा घर काफ़ी नहीं है ।

एक खिड़की से मेरा काम नहीं चलेगा,
मुझे चाहिए पूरा का पूरा आकाश
अपने असंख्य नक्षत्रों और ग्रहों से भरा हुआ ।

इस ज़रा-सी लालटेन से नहीं मिटेगा
मेरा अँधेरा,
मुझे चाहिए
एक धधकता हुआ ज्वलन्त सूर्य ।

थोड़े-से शब्दों से नहीं बना सकता
मैं कविता,
मुझे चाहिए समूची भाषा —
सारी हरीतिमा पृथ्वी की
सारी नीलिमा आकाश की
सारी लालिमा सूर्योदय की ।

अशोक वाजपेयी, तिनका तिनका
दिल्ली, प्रवीन प्रकाशन 1996:I.339